विस्तार पत्रक-NRCC/2016/1

ऊँटों से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियाँ और उनकी रोकथाम

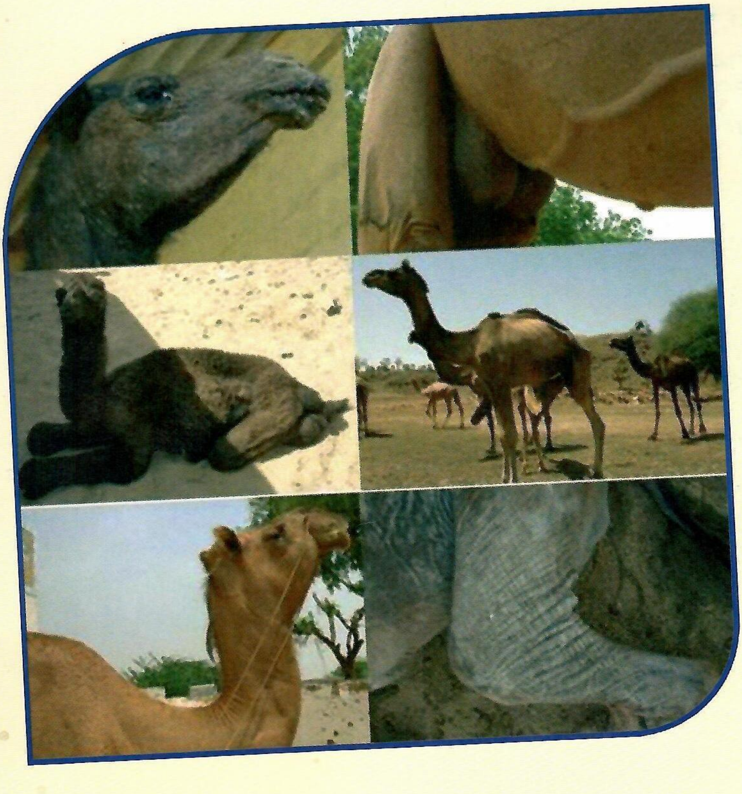

भा. कृ. अनु. प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर 334001
(राजस्थान)

ऊँटों को होने वाली कई संक्रामक बीमारियाँ जिन्हें "जूनोटिक रोग" कहा जाता है, मनुष्यों में भी फैल सकती है। ऊँटों की देखभाल में लगे लोग, पशु–चिकित्सक, ऊँट दूध–दोहक और ऊँटों के संक्रमित दूध या मांस का सेवन करने वालों में ऐसे रोगों के फैलने की संभावना ज्यादा होती है। आमतौर पर ऊँट पालकों के पास ऐसे रोगों के लक्षण और बचाव के तरीकों की समुचित जानकारी नहीं होती है, जिससे खतरा बढ़ जाता है। इस पत्रक के तालिका 1 में ऐसे प्रमुख जूनोटिक रोगों के (ऊँटों व मनुष्यों) में लक्षण वर्णित है, जबकि तालिका 2 में उनसे बचाव के कुछ सामान्य उपाय सुझाए गए हैं।

ऊँटों से मनुष्यों में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों को उनके फैलने के तरीकों के आधार पर निम्नलिखित दो भागों में बाँटा गया है :

1. बीमार पशु के सीधे संपर्क या उनसे उत्सर्जित स्रावों के संपर्क से फैलने वाली बीमारियाँ

(क) कैमल पॉक्स (माता / चेचक) : इस रोग के विषाणु ओर्थोपॉक्स समूह के वैरिओला वायरस से मिलते–जुलते होते हैं। रोग के विषाणु बीमार पशुओं के दूध, सलाइवा, आँखों के स्राव एवं नासिका–स्राव में पाए जाते हैं और इनसे संक्रमित पदार्थों के सीधे संपर्क में आने या कीटों द्वारा फैलाए जाने पर ऊँट या मनुष्य, बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं। कम उम्र के ऊँटों में बीमारी ज्यादा गंभीर रूप ले लेती है पर अधिक उम्र के ऊँटों में यह बीमारी ज्यादा नुकसानदायक नहीं होती। बीमार ऊँटों के सीधे संपर्क में आने वाले, खासकर ऊँट दूध–दोहक इस रोग के शिकार हो सकते हैं। हाथों या शरीर के अन्य भागों में छोटे–छोटे दर्ददायक फफोले बनना इस रोग का लक्षण है। यदि किसी ऊँट में छोटे–छोटे दाने पहले सिर और तत्पश्चात् पैर व शरीर के अन्य भाग में नजर आएं और ऊँट को बुखार हो तो तुरंत डाक्टरी जाँच करवाएँ। ऐसे बीमार पशुओं को अन्य पशुओं से अलग कर दें तथा उन्हें छूने के पश्चात् हाथ साबुन से अच्छी तरह धोएं।

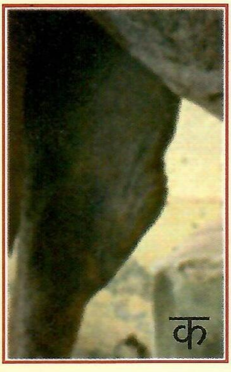

चित्र 1 – क. ऊँट के पैर के चमड़े में उभरे हुए पॉक्स के दाने
ख. संक्रमित ऊँट की देखभाल में लगे व्यक्ति के हाथ में पॉक्स के दाने

(ख) खारिश (मैंज / पांव) : मैंज ऊँटों की एक प्रमुख बीमारी है जो सर्कोप्टिक स्कैबियाई नामक माईट (सूक्ष्म कीट) से होती है। इस बीमारी में ऊँटों के बाल गिर जाते हैं, चमड़ा मोटा हो जाता है तथा पशु धीरे–धीरे कमजोर होता जाता है। कभी–कभी यह बीमारी मनुष्यों में भी फैल जाती है और हाथ, उंगलियों के बीच के भाग, कलाई, कुहनी व शरीर के अन्य भागों में दाने के साथ खुजली हो सकती है। ऊँट की सवारी करने वालों में रोग के लक्षण जाँघों में दिखाई दे सकते हैं। इस बीमारी से खुद को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि बीमार ऊँटों का समुचित ईलाज कराया जाए। ऊँटों में आइवरमेक्टिन नामक दवा इस रोग में काफी प्रभावकारी पायी गई है। मनुष्यों में हैक्साक्लोरो साइक्लोहेक्सेन व अन्य कई दवाईयाँ उपयोग में लाई जाती है।

(ग) एंथ्रेक्स : यह रोग बैसिलस ऐंथ्रेसिस नामक जीवाणु से होता है जो गोपशु, बकरियों, ऊँटों व अन्य पालतू पशुओं को भी प्रभावित कर सकता है। संक्रमित पशुओं की अचानक मौत हो जाती है। मृत्यु के पश्चात् अक्सर रक्त मिश्रित स्राव का रिसाव शरीर के विभिन्न छिद्रों यथा–मलद्वार, नासिका तथा योनीद्वार से होता है। ऐसे स्रावों में रोगों के जीवाणु भी पाए जाते हैं, जिनके संपर्क में आने पर मनुष्यों में हाथों या शरीर के अन्य भागों में सूजन के साथ लाल फफोले उत्पन्न हो सकते हैं। कभी–कभी फेंफड़ों में भी संक्रमण हो सकता है और व्यक्ति की मौत भी हो सकती है। हालांकि ऊँटों में ऐंथ्रेक्स कम ही होता है, पर इसकी गंभीरता को देखते हुए सावधानी बरतना आवश्यक है। ऐसे ऊँट जिसमें इस बीमारी के लक्षण दिखाई दें, तो उनकी मृत्यु के पश्चात् शव–निष्पादन में सावधानी बरतें। मृत पशु के शरीर को बिना छेड़ छाड़ के भूमिगत करें। उसके रहने के स्थान की सफाई में फिनायल का इस्तेमाल करें।

(घ) एम.ई.आर.एस.कोरोना वायरस इन्फेक्शन (मर्स) : आमतौर पर इस बीमारी में ऊँटों में कोई लक्षण नजर नहीं आता। कभी कभी ऊँट को सांस लेने में थोड़ी तकलीफ होती है, नाक से स्राव आता है और फेंफड़ों में हल्की सूजन आ जाती है। परंतु मनुष्यों में यह बीमारी जानलेवा हो सकती है। हाल के दिनों में मनुष्यों में इस बीमारी का पता कई देशों यथा–सऊदी अरब, मलेशिया, जॉर्डन, कतर, कुवैत, यमन, बांग्लादेश, इटली, जर्मनी, दक्षिण कोरिया व इंग्लैण्ड में लगने के पश्चात् विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी जारी की थी। ऊँट इस विषाणु को मनुष्यों तक फैलाते हैं। तत्पश्चात् मनुष्यों के बीच इसका संक्रमण तेजी से एक दूसरे के बीच फैलता है। ऊँट पालक, बुचर–खाने में काम करने वाले लोगों और पशु चिकित्सकों में इसके संक्रमण की काफी संभावना होती है। बीमार पशु व मनुष्य के नाक और आँखों के स्राव में इसका विषाणु पाया जाता है। मूत्र, मल, दूध व

मांस में भी इसके विषाणु पाए जाते हैं। अतः ऊँटों में यदि साँस की बीमारी के लक्षण दिखाई दें तो सावधानी बरतें। नासिका और आँखों के स्राव को छूने के पश्चात् हाथ अच्छी तरह साबुन से धो लें। मुँह–नाक पर पट्ट. लगाकर ऐसे पशुओं के साथ काम करें।

(ड.) जीवाणु, विषाणु व प्रोटोजुआ द्वारा उत्पन्न आंत्रिक रोग (दस्त) : ऊँटों में दस्त करने वाले कारक जैसे क्रिप्टोस्पोरिडियम, ई–कोलाई व रोटा वायरस मनुष्यों को भी संक्रमित कर दस्त या पेचिस के लक्षण पैदा कर सकते हैं। अतः ऊँट के मल मूत्र की सफाई के पश्चात् हाथ अच्छी तरह से धोएँ बच्चों, बुढ़ों या एड्स रोगियों में यह बीमारी गंभीर रूप ले सकती है। इसके अलावा क्यू फीवर, डिप्थीरिया व टायफाइड का संक्रमण भी ऊँटों से मनुष्यों में फैल सकता है।

2. बीमार पशुओं के उत्पादों से फैलने वाली बीमारियाँ

(क) ब्रुसेल्लोसिस : इस बीमारी से पशुओं में गर्भपात हो जाता है। ऐसे संक्रमित पशु के दूध को बिना उबाले पीने से यह बीमारी, मनुष्यों को भी हो सकती है । इसके अलावा गर्भपात के पश्चात् पशु के मूत्र, गर्भपात बच्चे, प्लैसेंटा (जेर) आदि में बीमारी के जीवाणु काफी संख्या में विद्यमान रहते हैं। अतः ऐसे संक्रमित पदार्थों को छूने से भी रोग लग सकता है। अतः किसी ऊँटनी में गर्भपात हो गया हो तो ऐसे मृत बच्चे या ऊँटनी के शरीर से निकले स्राव को अच्छी तरह से निष्पादित किया जाना चाहिए। पुरुषों में इस बीमारी से बदन–दर्द, जोड़–दर्द, सरदर्द और नुपंसकता हो सकती है, जबकि स्त्रियों में गर्भपात हो सकता है।

(ख) तपेदिक (क्षय रोग/ट्यूबरक्लोसिस/टी. बी.) : ऊँटों में तपेदिक "माइकोबैक्टीरियम" नामक जीवाणु से होता है। बीमार ऊँट धीरे–धीरे कमजोर होते जाते हैं तथा कभी–कभी सांस की बीमारी के लक्षण दिखाई दे सकते हैं। बीमार ऊँटनियों के दूध व नासिका स्राव में इसके जीवाणु पाएँ जाते हैं। अतः दूध को अच्छी तरह उबालकर पिएं। साफ–सफाई का ध्यान रखें तथा समय–समय पर ऊँटों की डाक्टरी जाँच करवाएं।

(ग) स्कार्लेट फीवर : यह बीमारी "स्ट्रेप्टोकोकस पायोजनीज" नामक जीवाणु द्वारा पैदा किए टाक्सिन (जहर) से होता है। आम तौर पर यह जीवाणु ऊँटनियों में थनैला रोग पैदा करता है और इस रोग से ग्रसित ऊँटनियों के दूध से मनुष्यों में स्कार्लेट फीवर हो सकता है। बच्चों में यह बीमारी गंभीर रूप भी ले सकती है। इसमें बुखार, साँस संबंधी तकलीफ व त्वचा में लाली दिखाई देती है।

चित्र 1 क. ऊँट के फेफड़े में टी. बी. के लक्षण ख. ब्रुसेल्लोसिस के कारण हुआ गर्भपात

(घ) सिस्टीक हाईडेटिडोसिस : यह एक फीताकृमि के लार्वे से उत्पन्न रोग है। इस फीताकृमि का वयस्क रूप कुत्ते की आंतों में पाया जाता है। कुत्ते के मल में उसके अण्डे निकलते हैं जिसे यदि ऊँट चारे के साथ खा ले तो उसका लार्वा शरीर के विभिन्न अंगों, यथा फेंफड़े, यकृत, तिल्ली और हृदय में विकसित हो जाते हैं। यदि मनुष्य इन अंगों के मांस बिना अच्छी तरह पकाए खा ले तो बीमारी उसमें भी फैल सकती है।

चित्र 2 ऊँटों के फेफड़े (क) तथा यकृत (ख) में हाईडेटेड सिस्ट

(ड़) टोक्सोप्लाजमोसिस : बिल्ली इस बीमारी को ऊँटों तक फैलाती है । संक्रमित ऊँटों के मांस में इसके कारक पाए जाते हैं। संक्रमित पशु का मांस बिना पकाए खाने से या उसके सम्पर्क में आने से यह बीमारी मनुष्यों में फैलती है। स्त्रियों में इसकी वजह से गर्भपात हो सकता है।

तालिका 1. प्रमुख जूनोटिक रोगों के ऊँटों एवं मनुष्यों में लक्षण

रोग	ऊँटों में लक्षण	मनुष्यों में लक्षण
कैमल पॉक्स/माता/चेचक	बुखार, शरीर के कुछ हिस्सों में दाग/फफोले / पपड़ी दिखाई देना	हाथ या शरीर के अन्य भागों की त्वचा के ऊपर पीड़ादायक फफोले / पपड़ी प्रकट होना
खारिश (मैंज/ पांव)	बालों का गिरना, चमड़ा मोटा होना, बार बार खारिश करना व धीरे–धीरे कमजोर होते जाना	हाथ व कभी–कभी जांघों के बीच की त्वचा पर खुजली वाली फुंसियों का तेजी से फैलना
एंथ्रेक्स	अचानक मृत्यु, शरीर के प्राकृतिक छिद्रों से न जमने वाला पतला लाल द्रव्य का रिसाव	हाथ में अत्यंत पीड़ादायक फफोले बनना , कभी कभी गंभीर निमोनिया या सेप्टिसीमिया के लक्षण प्रकट होना
मर्स	सामान्यतः कोई लक्षण दिखाई नहीं देता	निमोनिया जैसे लक्षण जो तेजी से बढ़ता है और रोगी की मृत्यु तक हो सकती है
जीवाणु, विषाणु व प्रोटोजुआ द्वारा उत्पन्न आंत्रिक रोग	पतला दस्त, टोरडियों व कम उम्र के ऊँटों में कभी कभी रक्तश्रावी पेचिस	पतला दस्त या रक्तश्रावी पेचिस (खासकर एड्स पीड़ित लोगों में)
सिस्टीक हाईडेटिडोसिस	मृत्यु या बध के पश्चात् आंतरिक अंगों में सिस्ट (बड़ा फोड़ा) दिखाई देता है	मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारी के लक्षण, शारीरिक अंगो का काम न करना
टोक्सोप्लाज्मोसिस	सामान्यतः कोई लक्षण दिखाई नहीं देता .	बुखार, महिलाओं में विकृत शिशु का जन्म देना, गर्भपात् इत्यादि
ब्रुसेल्लोसिस	नपुंसकता, गर्भपात	पुरुषों में सरदर्द, जोड़–दर्द व नपुंसकता, महिलाओं में गर्भपात
स्कार्लेट फीवर	थनों में सूजन, थनैला रोग के अन्य लक्षण	त्वचा में लाली, तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ

तालिका 2. ऊँटों से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियों से बचाव के कुछ सामान्य उपाय

- समय-समय पर पशु–चिकित्सक की सलाह से आंतरिक व ब्राह्य परजीवियों को मारने वाली दवाएं ऊँटों को देते रहें।
- बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर पशु–चिकित्सक से तुरंत संपर्क करें। बीमार पशुओं को अन्य पशुओं से अलग कर दें।
- बीमार पशु के संपर्क में आने से बचें । उसके मल-मूत्र, सलाईवा व अन्य स्रावों के संपर्क में आने पर साबुन से अच्छी तरह से हाथ व शरीर के अन्य अंगों की सफाई करें ।
- बच्चों, गर्भवती महिलाओं तथा बीमार लोगों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है ।
- रोग के नियंत्रण हेतु डाक्टर की सलाह पर संपर्क में आए सभी पशुओं का सामूहिक उपचार करें ।
- संक्रामक रोगों से मरे पशु का शव-निस्तारण सावधानी पूर्वक करें । हो सके तो मृत पशु को कम से कम दो मीटर गड्ढा खोदकर खाल उतारे बिना ही भूमिगत करें । शव पर चूने का छिड़काव कर दफनाएँ। पशु का सामान जैसे झूल, मुक्षिका, रस्सा, लगाम आदि जला दें ।

-: प्रकाशक :-

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

-: लेखक :-

राकेश रंजन, शिरीष नारनवरे एफ.सी. टूटेजा, आर.के.सावल एवं एन.वी. पाटिल

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र

जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर 334001 (राजस्थान)

दूरभाष : 0151–2230183, फैक्स : 0151–2231213

मुद्रक :- स्कूल प्रिंट एण्ड ग्राफिक्स, जस्सूसर गेट, बीकानेर - 9982333378